वैदिक नदियाँ एवं उनकी उपादेयता

*डॉ. धर्मसिंह गुर्जर

सारांश

नदियों की उपादेयता मानव जीवन में बहुत अधिक है। जल तो जीवन है, जल के बिना प्राणिजगत जीवित नहीं रह सकता। इसीलिए मनुष्य उन स्थानों पर निवास करता है जहाँ वातावरण और जीवकोपार्जन के उपयुक्त संसाधन हो। इसके लिए नदियों के तक सबसे अनुकूल है। नदियाँ सदियों से इतिहास, राजनीति, धर्म और अर्थ का केन्द्र रही है।

कटु शब्द : वैदिक नदी असिवनी, उपादेयता

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति कण–कण में ईश्वर की सत्ता मानती है। "नदियाँ" दिव्य स्वरूप है। "देवी" का स्थान प्राप्त है गंगा, यमुना, सरस्वती आदि तीर्थ हमारे गोरवहे है। इन नदियों की बहुत उपादेयता है।

असिक्नी शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ

असित् शब्द से स्त्रीलिङ्ग में डीप् प्रत्यय के विधान के अनुसार क्न आदेश से असिक्नी शब्द की व्युत्पति हुई है। यास्कानुसार यह अशुक्ला, असिता है। सितम् शब्द श्वेतवर्ण का पर्यायवाची है। अतः इसका प्रतिषेध असितम् के द्वारा निर्दिष्ट है। असिक्नी शब्द भिन्न–भिन्न अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। वेदों तथा पुराणों मे असिक्नी शब्द रात्रि, औषधि, पंचजनी, दक्ष की पत्नी, श्याम, काली तथा कृष्णसर्पिणी इत्यादि अनेक अर्थो में प्रयुक्त हुआ है।

असिक्नी नदी ही चन्द्रभागा

वेदों में वर्णित असिक्नी नहीं ही चन्द्रभागा के नाम से व्यवहत होती है। वर्तमान में यह नही चिनाव नाम से अभिहित है। विपाशा–शतद्रू–इरावती–चन्द्रभागा–वितस्ता इस पाँच नदियों के साथ सिन्धु छठी नदी है। ये पाँच नदियाँ पंचनद अर्थात् पंजाब प्रान्त को सीचती है। ये पाँच नदियाँ जब सिन्धु प्रदेश में मिलती है तभी सिन्धुसम्भेद कहलाती है। महाभारत काल में असिक्नी नदी का नाम चन्द्रभागा प्रचलित नदी का भी वर्णन मिलता है।

चन्द्रभागा शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ

चन्द्रभाग एक पर्वत विशेष है। चन्द्रभाग पर्वत विशेष से चन्द्रभागा शब्द की निष्पति होती है। चन्द्रभागा शब्द से टच् प्रत्यय करके चन्द्रभागा शब्द की व्युत्पत्ति होती है।

अमरकोषकार के अनुसार भी चन्द्रभागा चन्द्रभाग पर्वत से व्युत्पन्न है। मानक हिन्दी कोषानुसार चन्द्रभाग से अचू तथा टाप् प्रत्यय करके चन्द्रभागा शब्द की व्युत्पत्ति हुई है।

चन्द्रभागा नही की उत्पत्ति

चन्द्रभागा हिमालय पर्वत का वह भाग है जिसमें से चन्द्रभागा या चिनाव नदी निकलती है। पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) में बहने वाली प्रसिद्ध नही चनाव का पुराना नाम उसके चन्द्रभाग नामक हिमालय के एक शिखर से निकलने के कारण पड़ा था। हिमालय के अन्तर्गत चन्द्रभाग एक पर्वत है, जिस पर ब्रह्माा ने देवताओं और पितरों के निमित्त चन्दमा के भाग किए थे। यहीं से चन्द्रभागा नदी का उद्‌गम भी है। कालिका पुराण के अनुसार एक प्रसड्‌ग प्राप्त होता है कि चन्द्रदेव को दिए गए शाप से छुटकारा पाने के लिए विधाता ने चन्द्रभागा नदी की रचना की थी।

चन्द्रभागा नदी की उपादेयता

नदियाँ अपने जल प्रवाह में मानव सभ्यता का इतिहास संजोए हुए है। नदी–पर्वत आदि की प्राकृतिक सीमाओं में अनेक जनपदों का विस्तार फेला हुआ था। वाल्मीकि युगीन भारत में वर्णित है कि यह चन्द्रभागा नदी भारत के उत्तर में विद्यमान थी, जो कैकय और भद्र जनपद के मध्य प्रवाहित होती थी। आधुनिक सन्दर्भ में यह चिनाब नदी कहलाती है। पाणिनिकालीन भारतवर्ष के अनुसार भद्र जनपद बहुत बड़ा था। पाणिनि के समय में भद्र जनपद दो भागों में बंटा था– पूर्वभद्र और उत्तरभद्र। रावी से झेलम तक भद्र जनपद का विस्तान था। बीच की चिनाब नदी उसे दो भागों में बाटती थी। स्वभावत झेलम और चिनाव के बीच का पश्चिमी भाग अपरभद्र (आजकल का गुजरात जिला) और चिनाव एवं रावी के बीच का भाग पूर्वभद्र (आधुनिक स्यालकोट और गुजरांवाला जिला) कहलाता था। भद्र जनपद की राजधानी शाकल (वर्तमान स्यालकोटा) थी। ऋग्वेद में शिवि नामक जाति विशेष का वर्णन मिलता है। इनका विषय (अधिकृत प्रदेश) शिवयः या शेवदेश कहलाता था। इस जाति का सुदास के साथ युद्ध का वर्णन मिलता है। वह लोग अत्यधिक वीर थे। ग्रीक लेखकों ने इन्हे सिबइ या सिवाइ कहा है अरौर अकेसाइन्म या चन्द्रभागा और सिन्धु के मध्यवर्ती देश के निवासी बतलया है। शिवियों की राजधानी शिवपुर थी। पुराणों में वर्णित है कि म्लेच्छों की भूमि सिन्धु नदी से लेकर चन्द्रभ्रागा नदी के किनारे तक और कौतीपुरी काश्मीर आदि देशों तक व्यापत रही। विष्णु पुराण से ज्ञात होता है कि चन्द्रभगा नदी का तटवर्ती प्रदेश पूर्व गुप्तकाल में म्लेच्छों तथा यवन–शक आदि द्वारा शासित रहा था। सुन्दर ढंग से वर्णित प्राचीन काल के अनेक व्यवहारों से परिपूर्ण गजतरडिगणी में चन्द्रभागा नदी राजा रणादित्य और रणाम्भा देवी के प्रसड्‌ग में वर्णित है राजा रणादित्य, राणाम्भा देवी द्वारा प्रदन हाटकेश्वर मन्त्र की साधना के पश्चात् विविध शुभ स्वप्नों एवं देवी चमत्कारों को देखकर वह दृढनिश्चयी राजा चन्द्रभागा नदी का भेदन कर नमुकच दैत्य की कन्दरा में चले गए। राजगरडिगणी में अन्यत्र वर्णन आता है कि तूलमूल्य ग्राम अपहरण के पश्चात् राला को राला जयपीड़ के प्रजापीड़न से, ब्राह्मणों को दुख देने और प्राणियों की खबर चन्द्रभागा नदी के तट पर मिली। मध्यदेश के राला ज्यल्लादीन की कश्मीरविजय की इच्छा थी। इसी प्रसड्‌ग के अन्तर्गत ऐतिहासिक चन्द्रभागा नदी के तट पर राजा की सेना का वर्णन प्राप्त होता है। सेना द्वारा कुछ दिनों में चन्द्रभागा नदी को पार कर काश्मीर देश को प्राप्त करने का भी उल्लेख मिलता है।

गरूड पुराण में चन्द्रभागा का तीर्थ के रूप में वर्णन किया गया है कि महाकेशी, कावेरी, विपाशा, एकाग्र, ब्राह्मण, देवकोटक तथा चन्द्रभागा ये सब महान् तीर्थ है। चन्द्रभागा नदी के तट पर तपस्वियों द्वारा यज्ञ किए जाने का भी वर्णन मिलता है। पुराणों में चन्द्रभागा नदी के तट पर तपस्वियों के आश्रय में मेधातिथि द्वारा महायज्ञ के किए जाने का उल्लेख मिलता है। सुत्तपिटक के विल्लियत्थेर अपदान में भी अनेक बौद्ध तपस्वियों का इस नदी के तट पर तपस्या किए जाने का प्रसंग मिलता है।

नदियों को समाज एवं संस्कृति की जननी कहा जाता है। नदियों से समबन्धित साहित्य पढ़कर आज भी लोग प्रचीन सामज के विषय में ज्ञान प्राप्त करते है। नदियों के तट पर सभ्यताएँ पनपती है ओर विकसित होती है। चन्द्रभागा नदी के तट पर किन्नर–किन्नरियों (देवयोनियों) के निवास का तथा उनके द्वारा किए जाने वाले भिन्न–भिन्न क्रिया–कलापों का वर्णन सुत्तपिटक के खुद्दकानिकाय में प्राप्त होता है। कश्मीर के इतिहास में चन्द्रभागा

नदी के तट पर स्वर्ण में मिश्रित उपलखण्डों की प्राप्ति का वर्णन मिलता है। बौद्ध ग्रन्थ सुत्तपिटक में चन्द्रभागा नदी के तीर में मृगों, मछलियों के प्राप्त होने का वर्णन मिलता है। अतः स्पष्ट होता है कि दूर अतीत में चन्द्रभागा नदी की ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक उपादेयता रही है।

***सह आचार्य**
व्याकरण विभाग
राजकीय आचार्य संस्कृत महाविद्यालय,
बौंली (राज.)

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. ऋग्वेद, भाष्यकारः, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, प्रकाशकः बसन्त श्रीपाद सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी, (जि० बलसाड़), संस्करणः 1985
2. पाणिनीय व्याकरण, सम्पादक, पण्डित हरिशङ्कर पाण्डेय, प्रकाशकः शिवालिक प्रकाशन 27/16 शक्तिनगर, दिल्ली–7, संस्करणः 2006
3. महाभारत, लेखकः महर्षि वेदव्यास, सम्पादकः डॉ० मण्डन मिश्र प्रकाशकः नाग पब्लिशर्स 11V.A जहवाहर नगर, दिल्ली–7 संस्करण, 1988
4. मिलिन्दपपालि, सम्पादक एवं अनुवादक, शास्त्री स्वामिद्वारिकादास प्रकाशकः बौद्ध भारती पो०बा० 1049, वाराणसी–1, संस्करण द्वितीय, 1990
5. वामन पुराण, सम्पादक वेदमूर्ति तपोनिष्ट पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य प्रकाशकः संस्कृति संस्थान ख्वाजा कुतुब, बरेली (उ0प्र0), संस्करण : 1971
6. कालिका पुराण, सम्पादकः श्री विश्वनारायण शास्त्री, प्रकाशकः चीखम्बा संस्कृत सीरज ऑफिस, गोपाल मन्दिर, वाराणसी – 1. संस्करण. प्रथम–1972
7. वाल्मीकि युगीन भारत, सम्पादक डॉ० मंजुला जयसवाल, प्रकाशक महामति प्रकाशन 59, बहादूरगंज, इलाहाबाद
8. पंतजलिकालीन भारत, सम्पादकः डॉ० प्रभुदयाल अग्निहोत्री, प्रकाशकः बिहार राष्ट्रभाषा – परिषद् पटना–4
9. पाणिनिकालीन भारतवर्ष, सम्पादक, वासुदेव शरण अग्रवाल, प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत सीरीज, चौखभ्या, वाराण्सी।